हिंदी साहित्य में कहानी का उद्भव कुछ विलम्ब से हुआ। जिन कहानीकारों ने कहानी के क्षेत्र में पदार्पण किया उससे कहानी के विकसित होने के साथ-साथ कहानीकारों को भी प्रतिष्ठा मिली ऐसे ही अद्वितीय व प्रतिभाशाली कहानीकार हैं प्रेमचंद। उनके सम्मुख कहानी कला के रुप और वस्तु दोनों की समस्याएँ थी इनके निराकरण के लिए उन्होंने विभिन्न साहित्य की कहानी-रचना-विधियों का अध्ययन कर स्वयं अपनी कहानी कला के शिल्प का निर्माण किया और उसे चरम विकास तक पहुँचाया वे जनता के लेखक थे।

प्रेमचंद की कहानियाँ व कहानी कला

मुंशी प्रेमचंद आरंभ में उर्दू में कहानियाँ लिखते थे, जिनमें राष्ट्रीय भावना का उन्मेष रहता था। सोजे वतन (१९०७) में प्रकाशित उनका पहला उर्दू में लिखा बहुचर्चित कहानी संग्रह था उसमें व्यक्त तीखी राष्ट्रीय भावना से नाराज होकर अंग्रेज सरकार ने उसे जब्त कर लिया था। इसके बाद प्रेमचंद ने हिंदी में कहानियाँ लिखनी शुरु की। हिंदी कहानी के द्वितीय उत्थान के अंतिम चरण में सामायिक, सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करने वाली प्रेमचंद की कहानियाँ प्रकाश में आई थी।

प्रेमचंद के इस क्षेत्र में आने से हिंदी कहानी साहित्य में एक अपूर्व परिवर्तन आ गया। इससे पूर्व कुछ सीमा तक हमारा कहानी साहित्य दूसरे साहित्यिकों के ऋण से अपना काम चलाता आ रहा था। अपनी कहानियों द्वारा उन्होंने सहस्त्रों मूक और दीन हीन किसानों और मजदूरों का प्रतिनिधित्व किया, जो पहले साहित्य में अछूत माने जाते थे। उनकी कहानियाँ प्रायः घटना प्रधान हैं। उनका सांसारिक जीवन का ज्ञान अत्यन्त विस्तृत और सूक्ष्म था। इसी से वे अपनी कहानियों में हमारी सामायिक राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं एवं आंदोलनों का सफ

Scanned by CamScanner

'ममता', 'बड़े घर की बेटी', 'नमक का दरोगा', 'अमावस की रात', 'मनावन', 'अँधेर', 'खून सफेद' इत्यादि।

३) ग्रामीण जीवन से सम्बान्धित कहानियाँ

'ईश्वरीय न्याय', 'सज्जनता का दंड' 'पंच परमेश्वर', 'घमंड का पुतला', 'दो भाई', 'मतातीर्थ', 'दुर्गा का मंदिर', 'बेटी का धन', 'बैंक का दिवाला', 'आत्माराम', 'गृह दाह', 'बूढ़ी काकी' 'विखंस' इत्यादि।

४) अद्भुतोद्धार विषयक कहानी तथा अन्य

Scanned by CamScanner

Topic..... Date.....

'मुक्ति मार्ग', 'सुजान भगत', 'प्रेम की होली' इत्यादि।

निष्कर्ष

प्रेमचंद के कथा संसार में मानवीय अनुभव की विविधता ठोस यथार्थ के धरातल पर अवस्थित है। इस अनुभव को प्रेमचंद ने वैचारिक संघर्ष और सामाजिक संदर्भों से अर्जित किया था। इसी का नतीजा है कि प्रेमचंद के साहित्य में सामान्य मनुष्य को पृष्ठभूमि में न रखकर केन्द्र में रखा गया है तथा उसकी संवेदना, पीड़ा और संकट को साहित्य में उठाया गया है। उनके साहित्य में ऐसे पात्र भी हैं जो रूढ़ि जर्जर संस्कारों से संघर्ष नहीं कर रहे अपितु उन औपनिवेशिक शक्तियों के खिलाफ भी खड़े होते हैं, जो उनका शोषण कर रहे हैं। आज के दौर में जब सामाजिक विषमता बढ़ी है प्रेमचंद का मूल्य और अधिक बढ़ जाता है। हिंदी उपन्यास और कहानी को कला के स्तर पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय तो प्रेमचंद को है ही शिल्प की और भाषा की दृष्टि से भी उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को विश्व स्तर पर पहुँचा दिया है।

Scanned by CamScanner